खेती की संस्कृति
भारत की खूबसूरती

हमारा भारत आज बहुत विकास पा चुका हैं और पाता आ रहा हैं। आज की भारत की इस विकास की एक कारक हमारी संस्कृति हैं। हमारी भाषा, धर्म, खेती, त्योहार आदी हमारी संस्कृति हैं। इनमे से खेती, खेती एक जरूरी संस्कृति हैं जिसने भारत के विकास का बड़ा सा अंग दिया हैं। अगर हम भारत के पुराने समय के कथाएँ सुने यो उससे हमें खेती की महत्व का एहसास होगा। एक राष्ट्र का विकास का शुरुवात खेती से शुरु होता हैं। इसलिए हम कह सकते हैं की भारत की विकास में खेती की संस्कृति एक बड़ा सा अंग पाता हैं।

संस्कृति की विविधता

हम जानते हैं की भारत विविधताओं

से भरा है। विविध तरह के भाषा, विविध तरह के वेष-भुषा, विविध तरह के त्योहार, विविध मौसम और विविध तरह के प्राकृतिक ~~सविशेषता~~ सविशेषता के अनुसार के कृषि, विविध धर्म आदी। पर हम भारतीय इन विविधताओं के बिच दिलों में एकता पालते है। एक दूसरे की धर्म, वेष-भुषा, त्योहार आदी का इज्जत करते है। हमारे भारत में विविध संस्कृतियाँ मौजूद है। पर जैसे ही हम भारतीय एकता रखते है वैसे ही संस्कृतियों की भी एकता है। संस्कृति माने विविध हो पर भारतीय एक साथ उनका पालन करते है। संस्कृतियाँ आपस मे जुड़ी भी होती है।

संस्कृतियों की जुड़ावत

भारत की संस्कृतियां आपस में जुड़ी होती है। जैसे की खेती। खेती की संस्कृति त्योहारों से जुड़ी होती है। अलग-अलग

धर्म के अपने-अपने त्योहार होते है। अलग-अलग धर्म के अलग-अलग भाषे को साहित्य रचनाएँ होती है। ~~सबसे ज्यादा~~ खेती की संस्कृति बाकी के संस्कृतियों का शुरुवात डालता है।

भारत की ~~और~~ विकास और खेती की संस्कृति

पुराने वक्त में खेती ही एक सी नौकरी थी। अंग्रेजों के कब्जे ने भारतीयों को अपनी भाषा, धन, त्योहार, और संस्कृतियों का एहसास हुआ। और आजादी के बाद सबसे ज्यादा विकास खेती में हुआ था। उसके बाद ही बाकी क्षेत्रों का विकास हुआ था। खेती की संस्कृति ने भारत की गरीबी को मिटाया है। विपणन केलिए खेती की साधन जरूरी होती है। कारागरों ~~के~~ को चलने में भी खेती जरूरी है। इसलिए ~~खेती~~ ही खेती संस्कृति एक महत्वपूर्वक संस्कृति है।

संस्कृतियों को भूलती समाज

आज के जमाने का एक बड़ी समस्या है की लोग संस्कृतियों का महत्व नही जानते है। वे सिर्फ अपने बारे में सोचते है और पैसे कमाने के पीछे भागते है। लोग जीना ही भूल जाते है। प्यार, करुणा, दया आदी इन लोगों से मिटती जा रही है। न किसी को अपनी भाषा के महत्व का एहसास है या त्योहार मानाने का समय है। खेती की संस्कृति अब खतरे मे है। क्योंकि आजकल सभी लोग अलग-अलग नौकरियों में आकर्षित है। आज सबको बड़ी मजूरी मिलती है। इसलिए किसी को भी खेती करना पसंद नही। और जो लोग खेती करने को पसंद करते है और करते है उन्हें कम माना जाता है। ये हमारे समाज को और अपने राष्ट्र को खतरे में डाल सकता है। आज की हमारी राष्ट्र की विकास संस्कृतियों की वजह से है। इसलिए संस्कृतियों का

पालन न करना समाज और राष्ट्र से अज्ञान पाने का समान है।

राष्ट्र से प्यार, संस्कृतियों का पालन

हमारे राष्ट्र विविध संस्कृतियाँ मौजूद है। और हमें उनका पालन करना चाहिए। आज हम देख सकते हैं की हमारा समाज धीरे-धीरे भूल रही है। थोड़े लोग कई और राष्ट्रों के संस्कृतियों पर आकर्षित हैं। जैसे की अंग्रेजी। पर हमें अपने राष्ट्र से प्यार रखना चाहिए। बाकी राष्ट्रों की संस्कृतियों में आकर्षित होना कोई बूरी बात नही है मगर अपनी संस्कृतियों का पालन भी करना हमें भूलना नही चाहिए। संस्कृतियों का पालन करने से हमें एकता का एहसास भी होता है। इसलिए हम कह सकते हैं की संस्कृतियों का पालन करना एक तरह से देश से प्यार करना है।

जैसे हो खेती हमारी खेती हमारी महत्वपूर्वक संस्कृति हैं बाकी के संस्कृतियों की भी अपनी महत्व होते हैं। इसलिए हमें अपनी संस्कृतियों से प्यार और इज्जत करनी चाहिए। अपनी राष्ट्र के प्रति आपका प्यार कभि मिठाने न दे। एक भी संस्कृति को कम न समझे। संस्कृतियों का पालन करने से हमारे दिलों में प्यार, करुणा, दया और एकता आदी मूल्य बन जाते हैं। आने वाले जमाने को भी संस्कृतियों का पालन करना सिखाना चाहिए। क्योंकि आगे की जमाना ही ~~भारत~~ हमारे राष्ट्र को आगे बढ़ाएगा। अपने राष्ट्र से प्यार करें और इज्जत करें संस्कृतियों का पालन करें। संस्कृतियों की पालन, भारत को विकसित और खूबसूरत बनाता हैं।